www.anvikshikijournal.com

ISSN 0973-9777
वर्ष - 7 अंक - 2
मार्च-अप्रैल 2013
GISI Impact Factor 0.2310

वर्ष - 7 अंक - 2 मार्च-अप्रैल 2013

भारतीय शोध पत्रिका

आन्वीक्षिकी

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.
एम.पी.ए.एस.वी.ओ. एवं आन्वीक्षिकी
सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित

मनीषा प्रकाशन

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

मासद्वयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका

प्रधान सम्पादिका

डॉ. मनीषा शुक्ला,maneeshashukla76@rediffmail.com

पुनर्निरीक्षक संपादक

प्रो. विभा रानी दुबे, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, उ.प्र.,भारत

डॉ. नागेन्द्र नारायण मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद,उ.प्र.,भारत

सम्पादक

डॉ. महेन्द्र शुक्ल, डॉ. अंशुमाला मिश्रा

सम्पादक मण्डल

डॉ. एस. पी. उपाध्याय, डॉ. अनीता सिंह, डॉ. विशाल अशोक आहेर, ज्योति प्रकाश, डॉ. पद्मिनी रविन्द्रनाथ,डॉ. (श्रीमती) विभा चतुर्वेदी, डॉ. नीलमणि प्रसाद सिंह, डॉ. प्रेम चन्द्र यादव, डॉ. रामनिवास पटेल, डॉ. मुकुल खण्डेलवाल, डॉ. एच. एन. शर्मा, मनोज कुमार सिंह, सरिता वर्मा, उमाशंकर राम, अवनीश शुक्ला, विजयलक्ष्मी, कविता, विनय कुमार पटेल, अर्चना बलवीर, खगेश नाथ गर्ग, मुन्ना लाल गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मण्डल

रेव डोडामगोडा सुमनासार (श्रीलंका), वेन केन्डागेले सुमनारांसी थेरो (श्रीलंका), रेव टी धम्मारतना (श्रीलंका), पी.त्रिराची सोडामा (श्रीलंका), फ्रा च्युतिदेश सैन्सोम्बट (बैंकाक,थाईलैंड), फ्रा बूनसर्मस्त्रिथा (थाईलैंड), डॉ. सीताराम बहादुर थापा (नेपाल), मोहम्मद सौरजाई (जाबोल, ईरान), माजिद करीमजादेह (ईराक), डॉ. अहमद रेजा केईखाय फरजानेह (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद जारेई (जाहेडान, ईरान), मोहम्मद मोजटाबा केयाहफरजानेह (जाहेडान, ईरान),डॉ. होसैन जेनाबदी (सिस्तान एवं बलूचिस्तान, ईरान), मोहम्मद जावेद केयाह फरजानेह (जाबोल, ईरान)

प्रबन्धक

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

सारांश एवं सूचीपत्र

मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास सूचीपत्र दिल्ली, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पत्रिका सूचीपत्र वाराणसी, सेन्ट्रल न्यूज एजेंसी सूचीपत्र दिल्ली, डी.के.पब्लिकेशन सूचीपत्र दिल्ली, नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ साइंस कम्यूनिकेशन एण्ड इन्फारमेशन रिसोर्स सूचीपत्र दिल्ली, नोएडा कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन सूचीपत्र गौतमबुद्ध नगर

पाठकों से

आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका प्रत्येक दो माह (जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर) पर एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण वाराणसी उ.प्र. भारत द्वारा प्रकाशित की जाती है। एक वर्ष में आन्वीक्षिकी,भारतीय शोध पत्रिका 6 भाग हिन्दी एवं 6 भाग अंग्रेजी एवं 3 अतिरिक्तांकों के भाग में प्रकाशित की जाती है। डॉक खर्च दर के सम्बन्ध में जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

वार्षिक पाठक मूल्य दर

संस्थागत : भारतीय 4,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 1200+51/- डाक शुल्क,वैदेशिक : 6000+डॉक खर्च,एक प्रति 1000+डाक शुल्क व्यक्तिगत : 3,500+500/-डाक शुल्क,एक प्रति 500+51 डाक शुल्क सहित,वैदेशिक 5000+डाक शुल्क,एक प्रति 1000+डाक शुल्क

विज्ञापन एवं निवेदन

विज्ञापन के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रधान सम्पादिका के पते पर संपर्क करें। आन्वीक्षिकी एक स्ववित्तपोषित पत्रिका है,अत: किसी भी प्रकार का आर्थिक सहयोग सराहनीय होगा। कृपया अपनी सहयोग राशि चेक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

सभी पत्राचार निम्नलिखित पते पर ही प्रेषित करें-

बी.32/16 ए. 2/1,गोपालकुंज,नरिया,लंका वाराणसी उ.प्र. भारत,पिन कोड 221005 मोबाइल नं. 09935784387, टेलीफोन नं. 0542-2310539.,E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com,www.anvikshikijournal.com

मिलने का समय : 3-5 दिन में(रविवार अवकाश)

पत्रिका संयोजन

महेश्वर शुक्ल,maheshwar.shukla@rediffmail.com

प्रकाशन

एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण

आन्वीक्षिकी

भारतीय शोध पत्रिका

वर्ष–7 अंक–2 मार्च–2013

शोध प्रपत्र

गीता एवं छान्दोग्योपनिषद् में कर्मवाद -डॉ. मनीषा शुक्ला 1-3
वैदिक वाङ्मय का एकेश्वरवादी स्वरुप ''रूद्र-शिव'' के संदर्भ में -डॉ. रामानुज सिंह 4-6

महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में वर्णन कौशल -डॉ. सपना भारती 7-9
अद्वैत वेदान्त की साहित्यिक एवं दार्शनिक परम्परा -कु. नन्दिनी सिंह 10-12

वेदों में वर्णित संस्कृति, सभ्यता एवं परम्परा -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 13-19
महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में भाव पक्ष -डॉ. सपना भारती 20-27

मानवीय जीवन में साध्य एवं साधन : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में -सुषमा देवी 28-30
काशी की गंगा -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 31-33

उत्तराखण्ड राज्य निर्माण आन्दोलन : पत्र पत्रिकाओं की पक्षधरता -डॉ. निशा यादव 34-36
भूमण्डलीकरण के दौर में मुंशी प्रेमचंद्र का चिंतन -डॉ. प्रभा दीक्षित 37-39

'उर्वशी' में प्रेम-संवेदना -डॉ. बी. जे. पटेल एवं प्रा. नयना सी. पटेल 40-44
स्त्री विमर्श : पराकाष्ठा और भटकाव -डॉ. संजीव सिंह 45-48

नेपाली लोकप्रिय आख्यान -योगेश पंथ 49-52
'रागदरबारी' का भाषिक और सामाजिक विश्लेषण की दृष्टि से एक अध्ययन -आशा मीणा 53-60

तुलसीदास -डॉ. मुकुल खण्डेलवाल 61-63
जनकवि कमल किशोर श्रमिक का रचना संसार -डॉ. प्रभा दीक्षित 64-71

'सफर के लिए रसद' होने की कामना करती निर्मला गर्ग -डॉ. राधा वर्मा 72-78
मानव-मूल्यों [जीवन मूल्यों] की अवधारणा और उसका साहित्यिक परिप्रेक्ष्य -अनामिका सिंह 79-82

नव सांस्कृतिक परम्परा : स्वातंत्र्योत्तर ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य -प्रभाकान्त द्विवेदी 83-89
गुप्त सम्राटों के सिक्कों का क्रमिक सूक्ष्म मूल्यांकन -मनोज कुमार सिंह 90-94

सूर्योपासना का महत्वीय स्वरुप -खगेश नाथ गर्ग 95-99
हेफतालों के सिक्कों का अध्ययन -मनोज कुमार सिंह 100-102

विल्बर श्रॅमचे संप्रेषण प्रतिमान : शेनॉनच्या संप्रेषण प्रतिमानातील तुलनेच्या संदर्भासह -प्रा. विशाल आहेर 103-106
स्मृतिकालीन विधिक सिद्धान्त की प्रकृति -डॉ. रामानुज सिंह 107-109

संप्रेषण व संप्रेषण चक्र -प्रा. विशाल आहेर 110-114
भारत में कृषि विकास की चुनौतियाँ : बागवानी -सुनील चौधरी एवं प्रो. तपन चौरे 115-122

क्लॅऊड शेनॉनचे गणितीय संप्रेषण प्रतिमान -प्रा. विशाल आहेर 123-125
21 वीं शताब्दी में भारत-चीन सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं सुझाव -कमल किशोर 126-130

भारत में नये राज्यों की मांग और राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या -कमल किशोर 136-139

মার্কসীয় নন্দন ও কবি সুভাষ মুখোপাধ্যায়ের কবিতার শিল্পচেতনা - তরুন কুমার মৃধা ১৪০-১৪৫
মহাশ্বতা দেবীর উপন্যাসে শোষিত আদিবাসী সমাজ ও তার জীবনচিত্র : -কৌশিকোত্তম প্রামানিক ১৪৬-১৫২

प्रिंट ISSN 0973-9777, वेबसाइट ISSN 0973-9777

पत्रावली संख्या V-34564,पंजीकरण संख्या 533/2007-2008
आन्वीक्षिकी ISSN 0973-9777
भारतीय शोध समग्र पत्रिका (2013) 7,146-152
प्रकाशनार्थ स्वीकृत 23 फरवरी 2013

মহাশ্বতা দেবীর উপন্যাসে শোষিত আদিবাসী সমাজ ও তার জীবনচিত্র :

কৌশিকোত্তম প্রামানিক*

लेखक का घोषणा-पत्र

भारतीय शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशनार्थ प्रेषित মহাশ্বতা দেবীর উপন্যাসে শোষিত আদিবাসী সমাজ ও তার জীবনচিত্র : शीर्षक लेख / शोध प्रपत्र का लेखक मैं কৌশিকোত্তম প্রামানিক घोषणा करता हूँ कि लेखक के रूप में इस लेख की सभी सामग्रियों की जिम्मेदारी लेता हूँ, क्योंकि मैंने स्वयं इसे लिखा है और अच्छी तरह से पढ़ा है और साथ ही अपने लेख / शोध प्रपत्र को शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी में प्रकाशित होने की स्वीकृति देता हूँ। यह लेख / शोध प्रपत्र मूल रूप में या इसका कोई अंश कहीं और नहीं छपा है और न ही कहीं मैंने इसे छपने के लिए भेजा है। यह मेरी मौलिक कृति है। मैं शोध पत्रिका आन्वीक्षिकी के सम्पादक मण्डल को अपने लेख के संशोधन एवं सम्पादन की पूर्ण अनुमति देता हूँ। आन्वीक्षिकी में लेख प्रकाशित होने पर इसके कापीराइट का अधिकार सम्पादक को देता हूँ।

াংলা উপন্যাস জগতে মহাশ্বেতা দেবীর আবির্ভাব ঝাঁসির রাণী(১৯৫৬) রচনা করে।তার উপন্যাসে আমরা দেখি তাঁর বৈচিত্র। তাঁর উপন্যাসের বিষয়বস্তুতে ইতিহাসচেতনা থেকে শুরু করে মধ্যবিত্ত জীবনের সারণী, আদিবাসী বিদ্রোহ, ও কৃষক ভাগচাষী, ভূমি আন্দোলন। যদিও এ বিষয়ে আলচ্য তার সেই সব উপন্যাস যেগুলোতে আদিবাসী জীবন-যাপন, রীতি-নীতি, বিশেষভাবে ফুটে উঠেছে। বাংলা সাহিত্যের ইতিহাসে মাহশ্বেতা দেবীর পূর্বে ও সমকালে কয়েকজন শক্তিমান লেখক সমাজের অন্তজ্য শ্রেণীদেরকে নিয়ে সাহিত্য রচনা করেছেন।তারাশঙ্কর বন্দোপাধ্যায়ের 'হাসুলিবাকেঁর উপকথা','নাগিনী কন্যার কাহিনি'(১৯৫২), বিভূতিভূষন বন্দোপাধ্যায়ের 'আরণ্যক', মানিক বন্দোপাধ্যায়ের 'পদ্মা নদীর মাঝি'(১৯৩৬),সমরেশ বসুর 'গঙ্গা'(১৯৫৭), প্রফুল্ল রায়ের 'পূর্বপার্বতী'(১৯৫৭),সতীনাথ ভাদুর 'ঢোড়াই চরিত মানস'(১৯৪১), দেবেশ রায়ের 'তিস্তা পাড়ের বৃতান্ত' প্রভৃতি উল্লেখযোগ্য। এসব উপন্যাসে আমরা আদিবাসীর জীবনের আলেখ্য আমরা সেভাবে পাই না। মহাশ্বেতা দেবীর তাঁর 'অরণ্যের অধিকার'(১৯৭৭), 'চোট্টি মুণ্ডা এবং তার তীর' (১৯৮২),টেরোড্যকটিল, পূরণ সহায় ও পিরথা (১৯৮১) উপন্যাসে শোষিত আদিবাসী জনজীবনের জীবনালেখ্যর পূর্ণরূপ পরিচয় প্রদান করেছেন।

আদিবাসী সমাজকে নিয়ে লেখার মধ্য দিয়ে আমরা লেখিকার আদিবাসীদের প্রতি অকৃত্রিম সহানুভূতি ও সুগভীর মমত্বকে উপন্যাসে প্রতিফালিত হতে দেখি।শুধু তাই নয় ব্যাক্তিজীবনে তিনি বিভিন্ন আদিবাসী সংগঠনের সঙ্গে যুক্ত থেকেছেন -

'১ পশ্চিমবঙ্গ লোধাশবর সমিতি
২ পশ্চিমবঙ্গ ভূমিজ কল্যান সমিতি
৩ পশ্চিমবঙ্গ ভূমিজ কল্যান সমিতি (মেদনীপুর)

*গবেষক, বাংলা বিভাগ, বেনারস হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়

© लेखक 2013, एम.पी.ए.एस.वी.ओ.मुद्रण एवं आन्वीक्षिकी सदस्य सहसंयोजन से प्रकाशित,सर्वाधिकार सुरक्षित मनीषा प्रकाशन। आज्ञा हेतु कृपया सम्पर्क करें : E-mail : maneeshashukla76@rediffmail.com & ijraeditor@yahoo.in, इस प्रपत्र को www.anvikshikijournal.com पर पढ़ें

৪ পচ্ছিমবঙ্গ ভূমিজ কল্যান সমিতি (পুরুলিয়া)
৫ পচ্ছিমবঙ্গ সহিজ জাতি কল্যান সমিতি (পুরুলিয়া)
৬ পচ্ছিমবঙ্গ খেড়িয়াশবর কল্যান সমিতি (পুরুলিয়া)
৭ মাঝগেরিয়া আদিবাসী গোওতা সুসার বাইসি(বাঁকুড়া)
৮ সান্তোল সমাজ লাহান্তি বাইসি (মুর্শিদাবাদ)
৯ ভরতকের আদিম জাতি (মধ্যগ্রাম)
১০ পচ্ছিমবঙ্গ হরিজন কল্যান সমিতি(কাঁচড়াপারা)
১১ দলিতজন মুক্তি সংগঠন (শিবপুর -হাওড়া)
১২ কিবিবুরু আদিবাসী মহিলা সমাজ (সিংভূম)
১৩ মুন্ডা সমাজ সাঁওয়ার জামদা(ওড়িশা)
১৪ কল্যানী ও চাকদহ অঞ্চলের ইটভাটা মজদুর সমিতি
১৫ আদিবাসী ও হরিজন সমিতি ''১

'টেরোড্যাকটিল পুরণ সহায় ও পিরথা' উপন্যাসের ভূমিকায় লেখিকা জানিয়েছেন আদিবাসী সমাজ সম্পর্কে লেখিকার নিজস্ব ভাবনা - *'আদিবাসী সমাজ নিয়ে যে যন্ত্রণাবোধ দীর্ঘকাল আমায় দগ্ধ করে, সে দহন আমার সঙ্গে চিতা অবধি যাবে। ভেবেছিলাম কোন এক শেষ কথায় পৌছালাম, কিন্তু নানা গোষ্ঠী, ভাষা, উন্নত সংস্কৃতি ও সমাজ আইনে বিভক্ত, আদি সভ্যতার শেষ স্মরনচিহ্ন এক বিশাল জনজাতির বিষয়ের শেষ নেই, শেষ কথা বলবার অধিকারী কে? আমি তো নই।আমি নিজে যেমন বুঝেছি, সেই অভিজ্ঞতার ভাষ্যকারই থেকে যেতে চই।''২*

লেখিকার এই উক্তিই স্পষ্টত জানান দেয় আদিবাসী সমাজ সম্পর্কে তার ভাবনা। লেখিকা তার লেখার বিষয়বস্তু, আদিবাসী জনজীবনের বিপন্নতা,সভ্যসমাজ থেকে তাদের জীবন যাপনের পার্থক্যের উৎস, শ্রেণীগত অবস্থানের অসাম্যের কথা লেখিকা নিজেই জানিয়েছেন - *'শ্রেণীগত অবস্থান থেকে আদিবাসীরা নিশ্চয় অনুরূপ অসহায় বিপন্নতায় বন্দি,সমান গরিব ও ভূমিহীন তফশিলী,অ-তফশিলী,সকল গরিব মানুষের মধ্যে পড়েন।কিন্তু আদিবাসীদের যে বিশেষ সমস্যা আমাকে উদ্বিগ্ন করে,তা হল,তাঁদের ভাষা আছে, লিপি নেই। তাঁদের ভাষার কিন্তু রোমান হরফে,বা রাজ্যে আছেন সে রাজ্যে বাবহৃত লিপিতে সেই প্রাচীন ও সুসমৃদ্ধ ইতিহাস ধরে রাখাও হয়েছে খুবই কম।আবার মূলস্রোতের ধাক্কায় এঁদের বার বার দেশান্তরী হতে হয়েছে। ফলে অনেক কিছু গেছে হারিয়ে। মূলস্রোত এই বিষয়ে যে অপরাধে অপরাধী তার ক্ষমা নেই। বৃটিশ সম্রাজ্যবাদের উচ্ছেদকল্পে যে সকল আদিবাসী কৃষক সংগ্রাম বৃটিশ অনুপ্রবেশের পর ঘটেছে,সেগুলো যে স্বাধীনতা সংগ্রামের অংশ, সে কথা স্বীকার করা হয়নি। ফলে ভারতের ইতিহাস, যা ছাত্র-ছাত্রীরা পড়ে, তাতেও এঁদের মহান সংগ্রামগুলির ইতিহাস সম্পূর্ণ উপেক্ষিত। লিপি নেই, প্রতিষ্ঠানিক শিক্ষাক্রমে এঁদের প্রবেশ প্রথমত খুব সংখ্যায়, দ্বিতীয়ত সেটা এক দেড়শো বছেরর ব্যাপার। শ্রেণীগত অবস্থানে যাঁরা ওঁদের সঙ্গে সমান সেই সব মানুষের লিপি সমস্যা ছিলো না।সমস্যাটা ছিল ও আছে, দারিদ্র ও নিরক্ষরতার। আজ আদিবাসী, স্বভাষায়, রাজ্যলিপিতে লিখতে পারেন ,লিখছেনও।রাজ্য ভাষাতেও লিখছেন। কিন্তু নিরন্তর ঠাঁইনাড়া হয়ে ছড়িয়ে পড়ার ফলে Oral Tration বহিত জাতি পরিচয় হারিয়ে গেছে।..... আদিবাসীরা আজ, আদিবাসী সত্তার স্বকৃতি চান, তা তো দেখতেই পাচ্ছে ভারতবর্ষ। আর এই দাবির মধ্যে বঞ্চনার, তাদের সত্তার স্বকৃতি না পাবার, মানবধিকার থেকে বঞ্চিত হবার, বার বার ব্যবহৃত হবার ব্যাপারাটা এক তিক্ত সত্য।''৩*

ইতিহাসের পাতায় (১৮৯৯-১৯০০) সাল। দিকে দিকে মুন্ডারা বীরসা মুন্ডার নেতৃন্তে সরকারের বিরুদ্ধে, দিকু(বহিরাগত) মহাজনদের বিরুদ্ধে নিজের অরণ্যের অধিকারকে পূনরায় ফিরে পাওয়ার জন্য চারিদেকে বিদ্রোহ করছে।রাচী থেকে সিংভূম, মানভূম ব্যাপী আন্দোলন চলছিল। এরই প্রেক্ষাপট হলো মহাশ্বেতা দেবীর 'অরণ্যের অধিকার'(১৯৭৭ খ্রী) উপন্যাসটি। যেখানে সমস্ত মুন্ডা জাতিদের প্রতি দিকু মাহজনদের এবং তৎকালীণ ইংরেজ সরকারের নিস্পেষণ, শোষণ কে রূপায়িত করেছেন তুলেছেন এই উপন্যাসে। উপন্যাসের সূচনায় তিনি জানিয়েছেন - *''৯ ই জুন ১৯০০ । রাঁচি জেল।*

সকাল আটটার সময়ে বীরসা রক্তবমি করে অজ্ঞান হয়ে যায়। বীরসা মুন্ডা সুগানা মুন্ডার ছেলে, বয়স পঁচিশ বিচবাধীন বন্দী।..... অজ্ঞান বিরসা,অজ্ঞান,কিন্তু সব জানতে পারছে ও সব দেখতে পাচ্ছে ছবির পর ছবি। মুন্ডার জীবনে ভাত একটা স্বপ্ন হয়ে থাকে। ঘাটো একমাত্র খাদ্য যা মুন্ডারা খেতে পায়, তাই ভাত একটা স্বপ্ন। কোন না কোন ভাবে ভাত বীরসার জীবনকে নিয়ন্ত্রণ করেছে। বেশীর ভাগ সময়েই বিরসার যে উদ্ধত ঘোষণা। মুন্ডা শুধা ঘাটো খাবে কেন?কেন সে দিকুদের মত ভাত খাবে না?''৪

জেলে অবস্থানরত বীরসা মুন্ডার স্বপ্নাচ্ছন্নের এই প্রশ্নই জানিয়ে দেয় সভ্যজগতের আহারের সঙ্গে মুন্ডা আদিবাসীদের আহারের কি নিদারুণ তফাৎ। অরণ্য মুন্ডাদের মা, অরণ্যেই প্রতিপালিত হয়েছে মুন্ডারা।অরণ্য তাদের জন্মগত অধিকারের মধ্যে, এটা সকল মুন্ডদের জ্ঞাত। কিন্তু বহিরাগতরা (দিকু) এবং জমিদার- জোতদাররা মুন্ডা আদিবাসীদের ঘর ভেঙ্গেছে বারংবার, জমি জিরেৎ

থেকে উচ্ছেদ করেছে। আর অসহায় মুন্ডারা তাদের বাসস্থান বদলেছে এক নতুন আলোর আশায়,কিন্তু মেলেনি। তাইতো বীরসা অরণ্যের অধিকার চেয়েছিলো- *'অরণ্যকে ছিনিয়ে নেবে দিকুদের দখল থেকে। অরণ্য মুন্ডাদের মা, আর দিকুরা মুন্ডাদের জননীকে অপবিত্র করে রেখেছে। উলগুলানের আগুন জ্বেলে বীরসা জননীকে শুদ্ধ করতে চেয়েছিলো।''*৫

এককথায় অরণ্যের অধিকার উপন্যাসটি মুন্ডা জাতিদের জীবনের আলেখ্য। উপন্যাসের প্রধান নায়ক বীরসার জীবন শুরু হয় অনান্য মুন্ডা বালকদের মতো অন্যের গাই গরু চরিয়ে। উপন্যাসের অন্যতম প্রবীণ ধানী মুন্ডা জ্বেলে বসে অনান্য মুন্ডাদের জানায় বীরসার সংগ্রামের কথা। শুধু সংগ্রামের কথাই নয় অরণ্যবাসী মুন্ডাদের সহজ স্বাভাবিক জীবনযাত্রায় কিভাবে দিকু মহাজনদের দ্বারা ব্যাঘাত ঘটেছে। এই ঘটনাগুলিকে লেখিকা কখনো নিজের মন্তব্যে কখনো ধানী মুন্ডার উক্তির মধ্য দিয়ে স্পষ্ট করেছেন- *'চারিদিক থেকে মানুষ এসেছিলো। যারা এসেছিলো তারাই দিকু।ধানী জানত যারা এলে মুন্ডাদের প্রচীন খুটকাট্টি গ্রামব্যাবস্থা ভেঙ্গে গেল, যারা মুন্ডাদের উচ্ছেদ করে জমি- জেরাত দখল করে নিলো, তারাই দিকু। তারা 'বেঠবেগারীর' নিয়ম করল। বিনা মজুরিতে বেগার খাটতে হতো। ধানী জানে, জীবনের সবচেয়ে যন্ত্রণার্ত মুহুর্তগুলো মুন্ডারা গানে গানে ধরে রাখে..... দিকু ঘোড়া, চায় মুন্ডা পয়সা দিবে। দিকু পালকি চায়, মুন্ডা পয়সা দিবে। দিকু যা চায় সব দিবে মুন্ডা। দিকুর ঠিকাদারকে সাহেবের আদালতে জরিমানা করলে টাকা যোগাবে মুন্ডারা।তা বাদে জোর করে টাকা ধার লিয়া করাবে মুন্ডাকে।তা বাদে উচ্ছেদ করে দিবে।*৬

উপন্যাসে শুধুমাত্র আমরা দিকু মহাজনদের শোষণ চিত্রই পাই না।সেই সঙ্গে মুন্ডাদের বিশ্বাস, রীতি- নীতি,জীবন যাপন,ইত্যাদি বিষয়ও উপন্যাসে দেখা যায়। তাই জ্বেলে বসে প্রবীণ ধানী মুন্ডা অন্যান্য মুন্ডাদেরকে বলে বীরসার পূর্বপুরুষদের কথা, কিভাবে ছোটনাগপুর অঞ্চল মুন্ডাদের বসতি হয়ে উঠেছে, তার কথা-

''ওরা এসেছিলো দুভাই- চাটিয়া হরম আর নাগু ।তখন শ্রাবণ মাস ডোমডোগরা নদীতে বান ডেকেছিলো দু-কুল ছাপিয়ে। যেখানে সেই নদীর ধারেই ওরা চুটিয়া গ্রাম পত্তন করে। ওদের দু-ভাইয়ের নাম থেকে ক্রমে অঞ্চলটির নাম হল ছোটনাগপুর।'' ৭ শুধুমাত্র ধানী মুন্ডা নয়। বীরাসা মুন্ডার বাবা সুগান মুন্ডার ও বিশ্বাস তার পূর্বপুরুষ চটু আর নাগু এসে অচোটা জমিতে চাষ করে কুমারী অরণ্যের কৌমার্য ঘুচিয়ে মুন্ডারীদের পত্তন ঘটেছিলো।

মুন্ডাদের জীবন যাত্রায় কোন মা তার আদরের ছেলেকে আঁচলচাপা দিতে পারেনা। কারণ তাদের রক্তে মিশে যায়, যে করেই হোক পেটের ঘাটোটা জোগাড় করো।আর এই যোগাড়ী করতে হয় মুন্ডা ছেলেদের দিকু মহাজনদের গাইচরী করে বা কোন দিকুর কামারে ঝাটাপাট দেবার কাজ করে। অনাহার মুন্ডাদের জীবনে এক ভয়াল সমস্যা। এই সমস্যা থেকে বাঁচতে গিয়ে মুন্ডাদের মহাজনদের কাছে বেঠবেগরী অর্থাৎ বিনা মুজুরীতে খাটতে হয় মহাজনদের নিজস্ব জমিতে।অভাব, অনটন, ও অনাহার তাদের জীবন যাত্রার নিত্যসঙ্গী। কিন্তু তা বলে এতটাই অভাব তাদের জীবনে যে তারা ধর্মান্তরিত হতেও কোন দ্বিধা থাকে না। কখনো খ্রীষ্টান ধমেও দীক্ষিত হয়। ধর্মান্তরিত হলেই তো অনাহার মিলবে এই আশায় তারা ক্রমবশতই ধর্মান্তরিত হতে থাকে। তৎসত্বেও তারা তাদের নিজের দেবতা বোঙা-বুঙিকেও কখনো অশ্রদ্ধা করেনি।

মুন্ডাদের কোন সাক্ষর লিপি নেই,তাদের সমস্ত দুঃখ, যন্ত্রনা, অভাব-অনটন, মহাজন কর্তৃক তাদের শোষণ,ইংরেজ সরকারের নিষ্পেষণের অবর্ণণীয় যন্ত্রণার কথা উচ্চ আদালতে বোঝাতে পারে না। যদিও এই উপন্যাসে সহৃদয় মুন্ডারী ভাষা জ্ঞাত জেকব অনেকটাই লড়েছে মুন্ডাদের সপক্ষে হয়ে মুন্ডা রায়ট কেসে সরকারের বিরুদ্ধে। ডেপুটি সুপার অমূল্যবাবুর ডায়েরীর পাতা থেকে ইংরেজ সরকার কর্তৃক মুন্ডাদের বিচারের নামে প্রহসনের কথা জানা যায়-*''এদের হাতে হাতকড়া দিয়ে, পায়ে ও কোমরে শেকল পরিয়ে দিনের পর দিন আদালতে আনা হয়, অথচ বিচার হয় না। এ সভ্যতার কলঙ্ক ।..... জেল থেকে ম্যাজিস্ট্রেটের এজলাস তিনশো গজের বেশ কিছু দূরে। শেকলগুলো এত ভারি যে এটুকু যেতেই বেচারিরা থেমে দাঁড়িয়ে পড়ে। জেল থেকে ওরা বেরোয়। এজলাসে বসে সকাল সাতটায়। জানি না সকালে তার আগে ওরা কিছু খেতে পায় কি না।তবে ডাকবাংলোয় বসে বসে দেখি জেলে ফেরার সময়ে ওরা অবসন্ন হয়ে পড়ে যাচ্ছে পথে।"*৮

আইনজীবি জেকব ও 'দি বেঙ্গলী' ও 'দি স্টেটম্যান' একজোটে সরকারের উপর চাপ দেওয়াতে ১৯০০ সালের নভেম্বর মাসে মুন্ডা রায়ট কেসের ফলাফল বেরোয়। কিন্তু ৪৮২ জন মুন্ডার শুধু মাত্র বিচার করা হয়। অনেক বিচারধীন অবস্থায় অনেক বন্দীদের মৃত্যু হয়।তাদের অনেকেই জানে না কি কারণে সরকার তাদের বন্দী করে রেখেছে।

বীরসার মৃত্যুর মধ্য দিয়ে বিদ্রোহ মুন্ডাদের বিদ্রোহ শেষ হয়েছে ঠিকই কিন্তু তাদের মধ্যে বিপ্লব এখনো শেষ হয়ে যায়নি। তাই মৃত্যু পথ যাত্রী সুনারাকে ধানী গেয়ে শোনায় -

'' বোলাপে বোলাপে হেগা মিসি হোন কো।
হোইও ডুডুগার হিজু তানা
বোলাপে.....

ওতে রে ডুডুগার সিরমা রে কোনআনসি।
দিসুম তাবু বুয়াল তানা
বোলপে.....

তাইওম তে হোরা কাপে নামিয়
দিসুম তাবু নুবা জানা
বোলাপে.....

ও ভাই, ও বোন,ও ছেলেরা, ছুটে যা, প্রাঁণ বাঁচা
আঁধি উঠেছে।
ও ভাই
ঝড় মাটির বুকে, আকাশ ঢ়াকা কুঁয়াশায়।''৯

তবে শুধু তাই নয় বিদ্রোহ শেষ হয়ে গেলেও মুন্ডা জাতির শোষণ এখনো অব্যাহত । এই উপন্যাসের ভূমিকায় লেখিকা লিখেছেন- *''ভারতবর্ষের স্বাধীনতা সংগ্রামের ইতিহাসে বীরসা মুন্ডার নাম ও বিদ্রোহ সকল অর্থেই স্মরণীয় ও তাৎপর্যময় এ দেশের যে সামাজিক ও অর্থনৈতিক পটভূমিকায় তাঁর জন্ম ও অভ্যুত্থান, তা কেবলমাত্র এক বিদেশী সরকার ও তার শোষণের বিরুদ্ধে নয়, একই সঙ্গে এ বিদ্রোহ সমকালীন ফিউডাল ব্যবস্থার বিরুদ্ধেও।"* ১০

'চোট্টি মুন্ডা এবং তার তীর'(১৯৮২) উপন্যাসেও মুন্ডাদের জীবনের আলেখ্য ধরা পরেছে। এখানেও ধরা পড়েছে মহাজন কর্তৃক মুন্ডার সমাজকে শোষণ ও বেঠবোগরী। বিরসা মুন্ডার সাথী প্রবীন ধানী মুন্ডাকে পরবর্তীকালে ছেড়ে দেয় ইংরেজ সরকার কিন্তু কতগুলি শর্তে। চোট্টি গ্রামের নাম অনুসারে চোট্টি ধানী মুন্ডার কাছে জানতে পারে দিকুদের বিরুদ্ধে মুন্ডাদের বিদ্রোহের ইতিহাস। 'বেঠবেগারী একটি জুলুম' মুন্ডারা একথা জানতে পারে প্রবীণ ধানী মুন্ডার কাছে।এই ধানী মুন্ডার কাছেই চোট্টি মুন্ডা তীর শিক্ষার সুযোগ পায়। ক্রমে ক্রমে চোট্টি ও তার আশেপাশের গ্রামের মানুষের ধারনা হয়েছে ধানী মুন্ডার মনপুত তীর চোট্টি পেয়েছে। এভাবেই চলে যায় চোট্টির জীবন ইতিহাস, ক্রমে হরিবংশ নামক ব্যাক্তির ইটভাঁটা কারখানার স্পর্শে আধুনিকতার স্পর্শ লেগে যায় চোট্টি গ্রামে। বদলে যায় জীবিকা জীবন যাত্রার পদ্ধতি। আবার অন্যদিকে তীরথনাথ লালার বেঠবেগারীকে মুন্ডা সামজের বৃহৎদাংশ মেনে নিতে পারে না। তারা বিদ্রোহ করে এই বেঠবেগারীর বিরুদ্ধে।এছাড়াও উপন্যাসে লেখিকা নকশাল আন্দোলনের চোট্টিদের জীবন যাত্রার প্রভাব ও সমকালীণ রাজনিতীর প্রভাবকেও উপেক্ষা করতে পারেননি। মুন্ডাদের সহজ, স্বাভাবিক জীবনে এসে পড়ে আর্মি, ঠিকাদার, রাজনৈতিক পোষা গুন্ডারা।এদের উপর অত্যাচারও হতে থাকে। পার্টির নাম করে গুন্ডারা জুলুম করে মুন্ডাদের উপর ।অবশেষে মুন্ডাদের পূনরায় তুলে নিতে হয় তীর ধনুক সমাজকে সমাজবিরোধীদের হাত থেকে মুক্ত করতে।মুন্ডাদের উপর বিচারের নামে পুলিশের প্রহসনকেও লেখিকা উপন্যাসে উপেক্ষিত করতে পারেননি।তাই উপন্যাসের শেষে চোট্টিও এস.ডি.ও কে জানিয়েছে তাদের উপর অবিচার-অত্যাচারের কথা- *''আজ হেথা দাঁড়াই সকল কথা মনে হতেছে। উ লালাটোর বাপের কারণে মোর বাপ মরে। কুনোদিন অবিশ্বাসী করি নাই, তাতেও উ মোর ছেলারে জেহেল ভেজে, আর উয়ারে আমি রেলের চাকা হতে বাচাঁই। কুনোদিন মুন্ডা ওঁরাও দুসাদ ধোবি অবিশ্বাসী করে নাই!তাতে কি মিলল মহারাজ? কি দিলে মোরাদের ? যাহাদের খুনের খুনের বিচার লাগি মোরাদের উপর জুলুম উঠবে, তারা জুলুম উঠায় নাই? বিটি ছেলার ইজ্জত নিতে গেছে, পহান-পহানী-মোতিয়া-রেলকুলিটো-দুখা-যুগল-দুগনের ঘরের বিটিছেলেরা -মরছিল সবে, তখুনতো পুলুস আসে নাই মহারাজ? এমন করি কাম দিশাও নাই?* ১১

গল্প, গান,আর কিংবদন্তী এই নিয়েই আবহমন কাল ধরেই চলে আসছে মুন্ডাদের সমাজের ইতিহাস।তাই 'চোট্টি মুন্ডা এবং তার তীর'(১৯৮২)উপন্যাসে আমরা দেখি চোট্টি মুন্ডার জীবনের সমস্ত কর্ম, তীর ছুরে বিভিন্ন মেলায় পুরস্কার জেতা, ইরেজ সাহেবের সঙ্গে আলাপনকে তার উত্তরসূরী মুন্ডরা বেধেঁ রাখে গানে ও গল্পে।তাদের জীবনের নিরন্তর দুঃখ, বঞ্চনা, মহাজনের কাছে বেঠবেগারীকে উপস্থাপন করে গানের মাধ্যমে। কেননা মুন্ডারী ভাষায় নেই কোন লিখিতব্য লিপি। তাই দিকু মহাজন তীরথনাথের অত্যাচার, শোষণ, উৎপীড়ন থেকে চোট্টি মুন্ডার সহযোগিতায় মুন্ডাদের 'খরচাই' অর্থাৎ সুদ থেকে অব্যাহতির বিষয়টিকে মুন্ডারা গানের মাধ্যমে প্রকাশ করে -

'' তীরথনাথ বলেছিলে সকল মুন্ডা খরচাই
চেট্টি বলল, কথা ফিরাইও হে
নয়তো বাণ মেরে তোমার খেত দিব জ্বালায়ে

তোমার গোলায় জ্বালাব হোলির আগুন
লালা বললাম ফিরালাম কথা
নাও করজ নাও ধান
করজ নাও ভুট্টা
মোর মুখ হতে অমন কথা বারাবে না আর
সকল কথা শুনে তবে চেট্টি তার বাণগুলিরে ডেকে ফিরাল
*বাণগুলি নেতে উঠেছিলো হে, ছুটে গিয়েছিলো প্রায়।''*১২

চোট্টি মুন্ডা জন্মাবধি আবহমানকাল ধরেই দেখে এসেছে মুন্ডাদের নিজস্ব জমির উপরে তাদের কোন অধিকার নেই,রয়েছে শুধু হাড়ভাঙ্গা খাটুনি। ফসল ফলাতেই তাদের জনম কেটে যায়। কিন্তু কোন মুন্ডা আজ অবধি ধনী হতে পারে নাই । তাই চেট্টি তার উত্তরসুরীদের বলে -*''..... ই ধরতিটা দেখো। ইরার সেবা করি মোরা জনম কে জনম কাটাই।কিন্তু কখনো কোন মুন্ডারে দেখি নাই ধনী হল,অনেক জেরাত করল, অনেক মুনিষ খাটাল।''*১৩

আধুনিকতার স্পর্শ থেকে ব্রাত্য মুন্ডা সমাজেও পরিবর্তন শুরু হয় আধুনিক যুগের পদধ্বনি শুনতে শুনতে। কোলকাতা থেকে ছোটনাগপুরে আসছে চিরঞ্জীলাল কয়লা কাটাবার জন্যে। ইটভাটার কাজ ও শুরু হয়েছে চোট্টি মুন্ডাদের গ্রামে। তাদের জীবন যাত্রার,জীবিকার, বিপন্নতা ঘটেছে ক্রমে ক্রমে।ভবিষৎ দূরদর্শী চোট্টি মুন্ডার কথায় তা ধরা পড়ে - *''জঙ্গল উড়ায়ে পাথর ভাঙ্গার ঠিকাদার হয়ে, কে আসবে জঙ্গলমহালের গাছ কাটার ঠিকাদার হয়ে। তারা ভি কুলি আনবে, মোরা ভি যাব। তাদের সঙ্গে এক হয়ে করতে হবে খেতমজুরি ঠিকাদার ও ব্যবসায়ীর কুলির কাজ। তখন গায়ে থাকবে জামা, হয়তো বা পায়ে জুতা। তখন 'মুন্ডা' পরিচয় থাকবে শুধু উৎসবে সামাজিক ব্যবহারে।''* ১৪

চোট্টি মুন্ডার এই উক্তির সঙ্গে গ্রামের প্রধান প্রতিনিধি পহানের উক্তিও ঠিক মিলে যায়।তাই এই উপন্যাসের চোট্টি গ্রামের মুন্ডারা তাদের আদি জীবিকা চাষবাস,জঙ্গলে শিকার করা,মহাজনদের বেঠবেগারী ছেড়ে দিয়ে সরকারের কুটির শিল্প, ও ইনডাস্ট্রিয়াল টাউনের কাজে তাদেরকে যোগদান করতে হয়। কিন্তু মুন্ডাদের অস্তিত্ব বজায় থাকে শুধু গান আর উৎসবে। তাদের 'সোহরাই' উৎসবে শোনা যায় গান-

''আধা ফসল আধা হকের জমি বাড়ি নিলে
হরমু, আহা, সোনার ছেলা,তারে পাঠালে জেহেলে
যার মেয়ে তীরের সাথ কথা বলে কে?
চেট্টি মুন্ডা কথআ বলে -
*তীর বাতাসে মিলায়ে ধেয়ে যায়।''*১৫

কিন্তু তাদের সামাজিক অবস্থার কোন পরিবর্তন হয় না।সামান্য জমির মালিকানা বিচলিত করে দেয় মহাজনদের।মহাজনরা মনে করে এই মালিকানা মুন্ডাদের মানসিক গঠন সাম্য বদলে দিতে পারে।একথা বাস্তব রূপ লাভ করে মহাজন তীরথনাথ ও হরবংশের মুন্ডাদের উপর অসন্তুষ্ট হওয়াতে।কেননা তারা সবসময় মুন্ডাদেরকে নির্ভরসা, নিরালম্ব প্রেতের মতো,শরনার্থীর মতোই দেখতেই তারা অভ্যস্ত।

'টেরোড্যাকটিল,পুরণ সহায় ও পিরথা' উপন্যাসে লেখিকা মধ্যপ্রদেশের পিরথা ব্লকের নাগেসিয়া উপজাতিদের কথা বিশেষভাবে বর্ণনা করেছেন।উপন্যাসে এই জনজাতির উৎস সম্পর্কে লেখিকা নিজেই লিখেছেন -*''ভারতের অস্ট্রিকদের বৈশিষ্ট্য মাঝারি উচ্চতা, কালো (কোন ক্ষেত্রে বেশি কালো)রং,লম্বাটে মাথা, ইষৎ চ্যাপটা নাকের গরন।..... অষ্ট্রিক আদিবাসীরা ভারত ব্যাপে ছড়িয়ে পড়ে,চলে যায় পূর্বে বর্মা, মালয় ও দক্ষিণপূর্বে এশিয়ার দীপপুঞ্জে .....বসতি করে থেকে যেতে যেতে।.....এই নাগেসিয়া অধিবাসীরাও তো তাদের মধ্যে।''* ১৬ উপন্যাসের বিষয়বস্তুর ক্ষেত্রে আমরা দেখি, মেসোজোয়িক যুগের টেরোড্যাকটিল যদি আজ হাজির হতো, আজকের মানুষ তাকে বুঝতে সক্ষম হতো না।টেরোড্যাকটিলকে মরতেই হতো,কেননা বেনোজায়িক পৃথিবী তার অজ্ঞাত। বিলুপ্ত পৃথিবী তার অজ্ঞাত। বিলুপ্ত পৃথিবী ও বর্তমান পৃথিবীর সংবাহন সম্ভব নয়।

সাংবাদিক প্রার্থনা পুরণ। পিরথা ব্লকের বিডিও হরিবংশের চিঠিতে পুরণ আমন্ত্রিত হয় পিরথা ব্লকের আদিবাসীদের সমস্যাকে সারা ভারত ব্যাপী প্রচার করার উদ্দেশ্যে। পুরণ পৌছে যায় পিরথা গ্রামে।সেখানে তখন মৃতাশৌচ চলছে। স্থানীয় আদিবাসী শংকরের ভাইপো বিখিয়া ও সমগ্র গ্রামবাসীরা আকাশে কি যেন একটা দেখেছে। বিখিয়া তার ছবি তুলে ধরেছে পাহারের গায়ে খোদাই করে। এভাবেই টেরোড্যাকটিলের আর্বিভাব হয়, চিহ্নিত হয়, এবং সন্ত্রস্ত হয় আদিবাসীারা। তাদের ধারণা তাদের পূর্বপুরুষদের অতৃপ্ত, অশান্ত আত্মা ছায়া ফেলেছে পিরথা গ্রামে। তাই সকলেই ভীত ও মনে করে তারা অশৌচ। স্থানীয় আদিবাসী শংকরের ভাবনায়

প্রতিফলিত হয় এর মূল কারণ- *'' আমাদের কি পূজা পরবে কোন ত্রুটি হয়েছিল? ফাল্গুন গাছে নতুন ফল নতুন পাতা, নতুন ফুল আসার আগে কেউ কি পরা পূজা না করে ছিঁড়েছিলো গাছের পাতা? শিকারে গিয়ে কেউ কি মেরেছি গর্ভিণী হরিণ? প্রাচীণ বয়স্কাদের কেউ কি অসম্মান করেছিল?..... জানি না কোথায় দোষ হয়ে গেল আমাদের।..... কেন এল ভিনদেশী মানুষ আমরা রাজা ছিলাম, প্রজা হলাম, দাস হলাম। অঋণী ছিলাম, দেনাদার করি দিল। দাস করে বেধে রেখে দিল হায়! নাম দিলো হারোয়াছি, মাহিদার।নাম দিলো হালি,নাম দিলো কামিয়া। দেশ চলে গেল, ঝরের মুখে ধূলোর মতো চলে গেল জমি, ঘর সব। যারা এল তারা তো মানুষ নয়। হায়! হায়! পাহাড়ে উঠে ঘর বাঁধি, রাস্তা আমাদের তাড়া করে আসে!অরণ্য চলে যায়, চারিদিকে অশুচি করে দেয়। পূর্বপুরুষের সমাধি ছিলো হায় হায়!তা গুঁড়িয়ে মাড়িয়ে সেখানে হল পথ, বাড়ি, স্কুল, হাসপাতাল।এর কোনটাও আমরা চাইনি, আমাদের জন্যেও করেনি।''*১৭ এথেকে বোঝা যায় পিরথা ব্লকের আদিবাসীরা পুনরায় চায় তাদের হৃত সম্মান। তারা আজও অজ্ঞতার অন্ধকারে দিনাতিপাত করে। শিক্ষার আলো সেখানে জ্বালিয়ে দেওয়া হয়নি। এমনকি হাসপাতালের প্রয়োজনকেও তারা বাহুল্য মনে করে।ডাইনি নজর, পূর্বপুরুষের আত্মার অভিশাপে অঁভিপ্সিত বিশ্বাসে এই এলাকার আদিবাসীদের দৃঢ়তা। বিডিও হরিবংশের উন্নয়নের শত চেষ্টাতে দুরীভূত হয়না তাদের সংস্কার।তাই টেরোড্যাকটিলটির ছবিও আদিবাসীদের মনে আশঙ্কার সৃষ্টি করে।

পিরথা ব্লকে দুঃর্ভিক্ষ, দ্রব্যমূল্য বৃদ্ধি,ব্যাপক ক্ষুধা,অনশন খাদ্যাভাবের রিলিফেও পৌছেয় না সেখানে। কেননা সরকারের মানচিত্রে পিরথা নামের ব্লকের কোন জায়গার অস্তিত্বই নেই। এভাবেই যুগযুগান্ত ধরে চলে আসছে আদিবাসী শোষণ ও নির্যাতন।মহাশ্বেতা দেবী তাঁর এই তিনটি উপন্যাসে সভ্য সমাজের সঙ্গে আদিবাসী সমাজের তফাৎ ও তাদের জীবন যাপন,রীতি-নীতি,জীবন - জীবিকার উদঘাটন সর্বোপরি সভ্য সমাজের কর্তৃক শোষণ ও নিপীরণকে তুলে ধরেছেন অতন্ত্য নৈপূন্যের সাথে।

থ্য সুত্র-

১. ঘোষ, নির্মল.*মহাশ্বেতা দেবী অপরাজেয় প্রতিবাদী মুখ*কোলকাতা: করুনা প্রকাশনী., ১৯৯৮.পৃ-২৩
২. গুপ্ত, সুশান্ত. সম্পা,*মহাশ্বেতা দেবীর রচনাসমগ্র ১৫.*কোলকাতা: দে'জ পাবলিশিং.,২০০২.ভূমিকা.পৃ-
৩. তদেব পৃ:-
৪. গুপ্ত, সুশান্ত. সম্পা,*মহাশ্বেতা দেবীর রচনাসমগ্র ৮.কো*লকাতা: দে'জ পাবলিশিং.,২০০২.পৃ-৭৭
৫. তদেব .পৃ-৭৭
৬ তদেব,পৃ-৮৯-৯০
৭. তদেব পৃ-৮৯
৮. তদেব,পৃ-২৩৩
৯. তদেব, পৃ-৮৮
১০ তদেব, ভূমিকা
১১. গুপ্ত, সুশান্ত. সম্পা,*মহাশ্বেতা দেবীর রচনাসমগ্র ৯.*কোলকাতা: দে'জ পাবলিশিং.,২০০২.পৃ-২৪৩
১২. তদেব,পৃ-১০৩-০৪
১৩. তদেব, পৃ-১১২
১৪. তদেব .পৃ-১২০
১৫. তদেব .পৃ-১৩৩
১৬. গুপ্ত, সুশান্ত. সম্পা,*মহাশ্বেতা দেবীর রচনাসমগ্র১৫.*কোলকাতা: দে'জ পাবলিশিং.,২০০২.পৃ-২৪৭
১৭. তদেব,পৃ-২৪৭-৪৮

Portrayal of the Oppressed Tribals in the Fiction of Mahasweta Devi

Koushikattam Pramanik
Rsearch Scholar
Department of Bengali
Banaras Hindu University

With *Jhansir Rani* [*The Queen of Jhansi* (1956)] Mahasweta Devi announced her arrival in the arena of Bengali Literature. In the realm of Bengali fiction she established herself as a novelist, a short-story writer and an essayist. Into her fiction Devi has incorporated a wide range of human interests—starting from a deep sense of historicity via concerns for the middle class stratum of the society to the affairs of tribal lives. Some of her celebrated novels are *Mother of 1084, Chotti Munda and His Arrow, The Glory of Shree Shree of Ganesh, Pterodactyl, Puran Sahay and Pirtha*. Exploitations of the tribals, especially that of the Santal, Orao, Dusad, Ganju and Munda communities get vividly portrayed in her consummate fiction. In *Aranyer Adikar, Chotti Munda and His Arrow* and *Pterodactyl, Puran Sahay and Pirtha* She has deftly delineated the life of the Mundas of Manbhum, Chota Nagpur and Singhbhum as well as the Nagasias of Madhya Pradesh. In these novels she has illutrated not only the social depravity of the tribal people but also their culture, rituals, beliefs and life-style. In a word she is the narrator of the oppressed and silent people.

लेखकों के लिए निर्देश

शोधपत्र का अनुरोध

लेखक अपना शोधपत्र डॉ. मनीषा शुक्ला ,प्रधान सम्पादिका आन्वीक्षिकी भारतीय शोध पत्रिका को ई-मेल पर प्रेषित करें। (maneeshashukla76@rediffmail.com)

प्राप्त शोधपत्र पत्रिका में प्रकाशन के पूर्व पुनर्निरीक्षित किये जायेंगे। स्वीकृत शोधपत्र कहीं और प्रकाशित नहीं होना चाहिए और न ही उस शोधपत्र का कोई भी भाग प्रधान सम्पादिका के अनुमति के बिना कहीं और प्रकाशित किया जा सकता है। कृपया अपने शोधपत्र की पाण्डुलिपि निम्न भागों में तैयार करें,शीर्षक ;सारांश ;पाण्डुलिपि ;पुस्तक संदर्भ सूची। कृपया पुनर्निरीक्षण की गुणवत्ता में सहायता करने हेतु अपना नाम पता पाण्डुलिपि पर न दें।

शीर्षक :शीर्षक पाण्डुलिपि पर अवश्य दें,किन्तु अपना पूरा नाम,पता,संस्था जहाँ पर अध्ययन अथवा अध्यापन कार्य सम्पादित किया गया हो, आपका विषय,दूरभाष अथवा मोबाइल,फैक्स,ई-मेल पत्राचार हेतु अलग पृष्ठ पर अवश्य दें। उपर्युक्त तथ्य आपके शोधपत्र के शब्द सीमा के अन्तर्गत ही माना जायेगा।

सारांश :कृपया शोधपत्र का सारांश 120 शब्दों में दें।

पाण्डुलिपि :इसके अन्तर्गत मुख्य पाठ्य सामग्री होगी ; जो 5 से 10 पृष्ठ तक होनी चाहिये। शोधपत्र 10 पृष्ठ से (सारांश,शब्द संक्षेप,संदर्भ सूची समेत)अधिक प्रकाशन हेतु स्वीकार नहीं किया जायेगा। अन्यथा वृहद् शोधपत्र(10 पृष्ठ से अधिक) प्रकाशन में देर भी हो सकती है। लेखक को यह बात स्वीकार होनी चाहिए कि शोधपत्र पुनर्निरीक्षण के दौरान किये गये संशोधन उन्हें मान्य होंगे। शोधपत्र प्रकाशन के दौरान त्रुटि की सम्भावना न बने इसका पूरा ध्यान रखा जाता है फिर भी कोई त्रुटि पाये जाने पर लेखक संशोधित रीप्रिंट प्राप्त कर सकता है ; पत्रिका में संशोधन की व्यवस्था नहीं है।

सन्दर्भ वर्णमालाक्रामानुसार :शोधपत्र के समापन पर कृपया संदर्भ वर्णमाला क्रमानुसार दें। पत्रिका का वर्ष,लेखक, पृष्ठ संख्या,भाग इत्यादि विस्तार से दें। पुस्तक शीर्षक या पत्रिका शीर्षक इटालिक दें।

पुस्तक :प्रकाशक का नाम,संस्करण संख्या,प्रकाशन वर्ष,लेखक का नाम,पुस्तक का नाम,पृष्ठ संख्या

पत्रिका :पत्रिका का नाम,लेख का शीर्षक,लेखक का नाम,प्रकाशक का नाम,अंक संख्या/माह,वार्षिक अथवा अर्द्धवार्षिक अथवा मासिक जो भी हो स्पष्ट करें।

समाचार पत्र :प्रकाशक,तिथि,सन् ,पृष्ठ संख्या,

इण्टरनेट :वेबसाइड,पृष्ठ संख्या,मुख्य शीर्षक,अन्त: शीर्षक।

मानचित्र एवं सारणी :मानचित्र एवं सारणी अथवा चित्र शोधपत्र की समाप्ति के अन्त में दें। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट ही होना चाहिए। इसका स्पष्ट संकेत पाण्डुलिपि में दें(उदाहरण सारणी संख्या 1)

विशेष :कृपया अपना शोधपत्र ई-मेल करने के बाद डॉक से अवश्य भेजें। अपने शोधपत्र के साथ-साथ अपना वायोडाटा, फोटो,स्वपता लिखा लिफाफा(25 रू के टिकट सहित)भेजें। शोधपत्र यदि हिन्दी भाषा में है तो ए.पी.एस प्रियंका रोमन(ए.पी.एस. कार्पोरेट 2000++)में तैयार सी.डी के साथ दें। शोधपत्र प्राप्त होने के एक सप्ताह के अन्दर लेखक को स्वीकृति पत्र प्रेषित कर दिया जायेगा। ई-मेल से प्राप्त शोधपत्र हेतु ई-मेल से स्वीकृति भेजी जायेगी। शोधपत्र प्रेषित करने के पूर्व प्रधान सम्पादिका से दूरभाष पर अवश्य सम्पर्क करें। सम्पादक मण्डल अथवा सलाहकार समिति में सम्मिलित करने का अंतिम निर्णय संस्था का होगा।

सदस्यों से निवेदन है कि वर्ष में 20 सदस्य पत्रिका से जोड़कर संस्था का सहयोग करें।

IJRA

www.onlineijra.com

ISSN 0973-9777

09739777

₹ 1200/-